

इस अंक में...

8 | क्रोध व्यक्ति को अन्धा बना देता है

9 | समसामयिकी घटना संग्रह

10 | समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ

19 | आर्थिक घटना संग्रह

- सुजलॉन एनर्जी ने दुनिया का सबसे ऊँचा हाइड्रिड पवन टर्बाइन जनरेटर कच्छ में लगाया
- आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन ने आर्थिक आउटलुक 2014 जारी की
- अलीबाबा समूह समर्थित क्वेक्सी ने डेक्सट्रा खरीदने की घोषणा की

24 | राष्ट्रीय घटना संग्रह

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सांसद आदर्श ग्राम योजना के तहत वाराणसी के जयापुर गाँव को गोद लिया
- केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने बुमेन एण्ड मेन इन इंडिया 2014 रिपोर्ट जारी की
- केन्द्र सरकार ने गैर-योजना व्यय में 10 प्रतिशत कटौती के लिए सरकारी खर्च में कमी की

28 | अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह



- भारत-भूटान नालंदा विश्वविद्यालय को विकसित करने पर सहमत
- मिस्र ने स्वेज नहर मुद्दे पर छह अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनियों के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर किए

31 | खेल खिलाड़ी

- रोहित शर्मा ने एकदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच में दोहरे शतक का विश्व रिकॉर्ड बनाया
- लुइस हैमिल्टन दूसरी बार फॉर्मूला वन विश्व चैम्पियन बने

35 | महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

लेख

37 | समसामयिक लेख : हवा-पानी की आजादी

38 | परिशिष्ट : भारत में श्रम विधान

86 | प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता

88 | तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक-57 का परिणाम

89 | रोजगार अवसर

हल प्रश्न-पत्र

आगामी आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक पी.ओ. सम्मिलित लिखित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

39 | तर्कशक्ति क्षमता

43 | संख्यात्मक अभियोग्यता

48 | सामान्य जागरूकता

50 | बिहार डाक/छँटाई सहायक परीक्षा, 2014

58 | आर.आर.सी. (पटना) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2013

आगामी आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक क्लर्क सम्मिलित लिखित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

64 | तर्कशक्ति परीक्षा

67 | English Language

70 | आंकिक क्षमता

73 | सामान्य सचेतता

76 | कम्प्यूटर ज्ञान

77 | बिहार कर्मचारी चयन आयोग इण्टर स्तरीय प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

सम्पादक : महेंद्र जैन

रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11-ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा-2

सम्पादकीय ऑफिस
1, स्टेट बैंक कॉलोनी, वन चेतना केन्द्र के सामने
आगरा-मधुरा बाईपास, आगरा-282 005
फोन- 4053333, 2531101, 2530966
फैक्स- (0562) 4053330, 4031570
ई-मेल: सम्पादकीय: publisher@pdggroup.in
कस्टोमर केयर: care@pdggroup.in

दिल्ली ऑफिस
4845, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110 002
फोन- 011-2325184/66

हैदराबाद ऑफिस
1-8-1/B, आर. आर. कॉम्प्लेक्स
बाग लिंगमपल्ली, हैदराबाद-500 044
फोन- 040-66753330
मो- 09391487283

पटना ऑफिस
पीरमोहनी चौक, कदमकुआँ
पटना-800 003
फोन-0612-2673340
मो-09334137572

कोलकाता ऑफिस
28, चौधरी लैन, श्याम बाजार
कोलकाता-700 004
फोन- 033-25551510
मो- 07439359515

लखनऊ ऑफिस
B-33, ब्लॉक स्ववायर, कानपुर
टैक्सी स्टैण्ड लैन, मवाड़ा,
लखनऊ-226 004
फोन- 0522-4109080
मो- 09760181118

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्ण लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटोकॉपींग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टोर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्य होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी 'सबसेस मिरर' की नहीं है.

क्रोध व्यक्ति को अन्धा बना देता है



अगर हम किसी व्यक्ति के द्वारा क्रोधित किए जाने पर उत्तेजित हो जाते हैं, तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, तो निश्चित ही हम उसके प्रभाव में आ गए, वह हमारा स्वामी बन गया और हम उसके क्रोध के गुलाम हो गए, क्योंकि उसके क्रोध ने हमारे भीतर क्रोध उत्पन्न कर दिया, बजाय इसके कि उसके क्रोध की प्रतिक्रियास्वरूप हम क्रोध करें, हम और भी कई तरीके से व्यवहार कर सकते हैं, जैसे उसके गुस्सा करने को धन्यवाद बोल सकते हैं, उसके गुस्सा करने में अगर हमारी कोई कमी हो, वाकई में हमसे कोई गलती हुई हो, इस वजह से सामने वाला व्यक्ति बार-बार सुना रहा है, टीका-टिप्पणी कर रहा है, क्रोधित हो रहा है, तो हम आत्म-विश्लेषण करके कह सकते हैं कि धन्यवाद, आपने मेरी त्रुटि मुझे बताई और आगे से मैं इस कमी को दूर करने का प्रयास करूँगा, इस प्रकार आप अपनी कमी को दूर कर सकते हैं, कई बार ऐसा होता है कि हमारी गलती नहीं होती, सामने वाला मानसिक तौर पर स्वयं परेशान होता है, एक बात को बार-बार कहने की उसकी आदत ही पड़ी होती है, ऐसे समय में उसको अनदेखा कर लें, सुन करके भी अनसुना कर दें, क्योंकि उसके व्यवहार पर जितना अधिक ध्यान दिया जाएगा, आपके भीतर उतनी ही अधिक उत्तेजना उत्पन्न होगी, अगर सामने वाला समझदार है फिर भी सुना रहा है और आपको ऐसा लग रहा है कि अगर आप वापस कुछ भी जवाब नहीं दोगे, तो वह आपको कमजोर समझकर बार-बार सुनाएगा, तो पहली बात कि अगर ऐसा लगता है कि इस स्थिति में मेरा कोई कर्तव्य बनता है कि मुझे वापस कुछ जवाब देना चाहिए, तो बड़े प्यार, इत्मीनान और धैर्य के साथ मैं अपनी बात रखें, अपनी बात कहना क्रोधित होना नहीं है, अपनी बात कहने में अगर आवेश शामिल हो गया, अगर अहम शामिल हो गया, अगर जिद शामिल हो गई, तो निश्चित तौर से हम प्रतिकूल प्रवृत्ति में चले गए हैं, हम क्रोधित ही हो रहे हैं और फिर से नया कर्म बन्धन कर रहे हैं अर्थात् स्वयं के लिए दुःखरूप भविष्य चित्रित कर

रहे हैं, इसीलिए अगर सामने वाला कुछ कह रहा है और आपको लगा कि वह गलत कह रहा है, आपको कमजोर समझ करके बार-बार आप पर प्रहार कर रहा है, तो बड़ी शान्ति से उसका जवाब दे दो और लगे कि वह ऐसे ही कह रहा है, उसके कहने में कोई मत नहीं है, कोई बात नहीं है, उसको कहने की आदत है, वह सुनाना ही चाहता है, तब तो सर्वोत्तम यही रहेगा कि आप सुन करके भी अनसुना कर दें, नहीं, तो आप जितना उन चीजों से प्रभावित होंगे वो और ज्यादा आपको प्रभावित करेंगी, दूसरी बात है कि कोई हमें कायर समझे, कमजोर समझे, इससे हम क्यों प्रभावित होवें, वह उनकी सोच है, उनका ऐसा सोचना है, तो सोचने दो, क्योंकि किसी के सोचने से हम कुछ नहीं हो जाते, हम जो हैं वो हमें अपने आपमें पता होना चाहिए कि हम क्या हैं और फिर हम औरों की सोच को बार-बार सिद्ध करने के लिए कब तक जाएं और क्या कुछ करेंगे और इस दुनिया में ये सम्भव नहीं है कि हम अपने आपको सिद्ध करने के लिए जाएं और हर एक व्यक्ति को सन्तुष्ट करते चले जाएं, ना तो हमें अपने आपको सिद्ध करने की जरूरत है, ना ही हमें दूसरों को सन्तुष्ट करने की जरूरत है, कौन क्या समझता है वह उसकी मर्जी, लेकिन हमें अनावश्यक न बोलना है, न अनावश्यक सोचना है, न व्यर्थ की किसी प्रकार की बात ही अपनी जुबान से निकालनी है, हमारी बात अर्थपूर्ण हो और अगर लगे कि हमारी बात में कभी कोई अर्थ नहीं है, अथवा इसको कहने से कोई परिणाम नहीं आने वाला है, तो शान्ति ही रखो, सही समय का इंतजार करो, समय कई बातों का जवाब खुद ही दे देता है।